कोशिका (Cell)

प्राणी के शरीर को बनाने वाली सबसे छोटी इकाई को कोशिका (Cell) कहा जाता है। चैपलिन के अनुसार " कोशिका वह संरचनात्मक इकाई है, जिसमें सजीव प्राणी की रचना हुई। सभी प्राणी के शरीर में कोशिका की संख्या भिन्न-भिन्न होती है। अमीबा एक कोशीय होता है। कोशिका को तीन भागों में विभक्त कर समझा जा सकता है। जो निम्नलिखित हैं :- (i) झिल्ली (Membrane), (ii) कोश-द्रव्य (cytoplasm) (iii) केन्द्रक (nucleus)

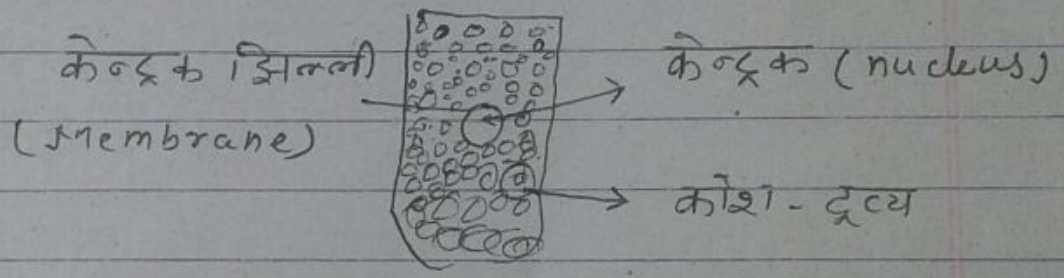

(i) केन्द्रक झिल्ली (Membrane) :- केन्द्रक झिल्ली कोशावरण कोश को चारों ओर से घेरे हुए रहता है इसी कारण कोश एक इकाई के रूप में दिखाई पड़ता है। इसी झिल्ली के कारण कोशिका बाहरी उत्तेजना से प्रभावित होता है।

(ii) कोशद्रव्य – कोशद्रव्य में कई तरह के पदार्थ पाये जाते हैं। कोशद्रव्य आवश्यकता फैल या सिकुड़ सकता है। इस क्रिया को संकुचन (contraction) कहते हैं। कोश-द्रव्य स्रावण (secretion) का भी कार्य करता है, जिसके कारण इसमें नये एवं पदार्थ अपने कोश को विकसित करने में मदद करते हैं और दूसरे कोशों के लिए भी उपयोगी होते हैं।

कोशिका द्रव्य बेकार बेकार पदार्थों को कोशिका से बाहर निकाल देता है, क्योंकि ऐसे पदार्थ कोशिका के लिए लाभप्रद नहीं होते हैं जिसे मलोत्सर्जन (excretion) कहते हैं।

(iii) केन्द्रक (nucleus): केन्द्रक को कोशिका का प्राण कहा जाता है क्योंकि जब यह मर जाता है तो कोशिका खुद ही मर जाता है। केन्द्रक में कई क्रोमोजोम होते हैं। हर क्रोमोजोम में जीन होते हैं। मनुष्य के कोशिका में 23 जोड़े क्रोमोजोम पाये जाते हैं। एक कोश में लगभग 200,000 जीन होते हैं। और 23 जोड़े क्रोमोजोम (गुणसूत्र) में 22 जोड़ा एक समान होता है और एक जोड़ा क्रोमोजोम भिन्न होता है। क्रोमोजोम के भिन्न जोड़े के आधार पर ही लिंग निर्धारण होता है।